ब्रह्मपुत्र को देखा है

दिनकर कुमार

अग्रज कवि लीलाधर मंडलोई
के लिए

ब्रह्मपुत्र को देखा है

दिनकर कुमार

ब्रह्मपुत्र

तब नदी का भी हृदय लहूलुहान हो जाता है
जब मांझी कोई शोकगीत गाता है

मैं कई बार बना हूं मांझी
गाया है शोकगीत

जब शाम उतरने लगती है
और सूरज पश्चिम की पहाड़ियों के पीछे
धंसने लगता है
तब मैंने जल को लहू बनते देखा है

रेत पर लिखे गए सारे अक्षर
उसी तरह उजड़ते हैं जैसे उजड़ती है सभ्यताएं
आहोम राजाओं को मैंने देखा है
अंजुली में जल भरकर पिंडदान करते हुए
मैंने कामरूप को देखा है
चीन का यायावर ह्वेनसांग उमानंद पर्वत पर
मिला था
उसकी आंखें भीगी हुई थी
हाथों में ढेर सारे फूल और जेब में
पुरानी पांडुलिपियां
ह्वेनसांग रास्ता भूल गया था

किस तरह एक दरिद्र किसान मनौती मानता है
प्रार्थना करता है- महाबाहु ब्रह्मपुत्र-
अगर क्रुद्ध हो गए तो किसान के सपने बह जाते हैं
ढोर और झोपड़ी- नवजात शिशु और
बांसुरी बजाने वाला चरवाहा लड़का
ले लेते हैं जल समाधि

जलधारा जब बातें करती है तब
प्रकृति का पुराना संदूक खुल जाता है
और मनुष्य के किस्से एक-एक कर बाहर आते हैं
कितना पुराना संघर्ष है मनुष्य और प्रकृति का

मैं गुफावासी आदिमानव से मिलता हूं
जो फुरसत में दीवारों पर शिकार के चित्र
उकेरता है
मैं उसकी जिजीविषा उससे उधार मांगता हूं

जब मांझी कोई शोकगीत गाता है
तब नदी का भी हृदय लहूलुहान हो जाता है